"हरि ओम् शरणम्"

वेद माता का महत्त्व :

श्री. रमेश वाचस्पति, आचार्य (व्याकरण-साहित्य)
साहित्य रत्न, काव्यतीर्थ,

अनादि, निधना, सूनृता वेद वरेली वाणी का नाम सभी जानते हैं। केवल संहिता रूपवेद का पाठ करनेवाले, तथा वेदार्थ भी जाननेवाले व्यक्ति बहुत दुर्लभ हैं। वेद के मूल पाठों प्रकृति की आठ विकृतियां, जटा, माला, शिखा, लेखा, ध्वज, दंड, रथ, धन के नाम से कभी-कभी सुनने को मिल जाती हैं। आश्चर्य तथा दुःख की बात यह है कि वेदों का पठन-पाठन बहुत कम हो गया है। ईश्वरीय ज्ञान का पढ़ना-पढ़ाना, समझना, समझाना, मानना, मनवाना, तथा सुनना, सुनाना मानव का कर्तव्य है।

"यदि कठिनाई के कारण चारों वेद नहीं पढ़ सकते, तो एक-एक मन्त्र कंठ करके, उनके अर्थ जानने का यत्न करें। वेदों के महान व्याख्याता, कुमारिल भट्ट का कहना है –

"चतुणमिपि वेदानामधीतिः सुशकानचेत्।
मन्त्रं मन्त्रधीयीत् मार्गस्थो नाव सीदति ॥"

आनन्दराय भरवी वेदभक्त कवि थे। उनके अनुसार "जिस का वैभव पाकर रात भी दिन बन जाती है, हम उसे चांदनी रात कहा करते हैं। जीवन में उस ज्ञान वैभव का प्रभात एक बार ही होता है। हे बन्धु उस आत्मानन्द समुद्र की एक तरंग लहरी यदि इस जीवन में तुम्हें नहीं मिली, तो मैं स्पष्ट कहता हूँ की सहस्रों सूर्यों के उदय होने पर भी तुम्हें घोर अन्धकारमयी रात्रि ही मिलेगी"। "विद्या परिणय" नामक प्रतीक नाटक में उन्होंने लिखा है –

"यस्याः, वैभवतोपि नमहरे वास्मामिराख्यायते।
तच्चाहर्न प्रयाति शश्वदिव स्यादेकः प्रभातोदयः ॥
आत्मानन्दसुद्या समुद्रलहरी सा वेद ना सदिता।
व्यकं सूर्यसहस्र द्योतित महो धोरो निशीथो भवेत् ॥

अतः वेद मानव सभ्यता के सुमहान-ज्ञान के सागर हैं –

वेदाद्धर्म प्रभवति शैलादिय नदी यथा।
वेदमेव सदाम्यसेते नास्ति वेदात्परं धनम् ॥
इदं शरण यज्ञानाम-इदमेव विजानताम्।
इदंशकेः परम्पारम् नास्ति वेदात्परं वलम् ॥

बच्चे का जन्म होते ही उसके कान में शिशु का पिता कहता है – "वेदोऽसि"। बच्चे की जिह्वा पर सोने की शलाका को मधु में डुबाकर लिखता है "ओऽम"। यह आस्तिकता की घुटी उसे पहले ही दिन मिल जाती है। ईश्वर का स्मरण वेदमन्त्रों द्वारा करने की प्रेरणा वेदों से मिलती है – "तत्वा यामि ब्राह्मणां वन्दमानः" (ऋग्वेद) हे ईश्वर, ब्रह्म अर्थात वेदमन्त्र द्वारा मैं आपकी वन्दना करता हूं। ईश्वर, के इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, वायु, हरि आदि अनेक नाम हैं। किन्तु मुख्य नाम ही लेकर उसका आवाहन करना चाहिये। "गीता" में अन्य नामों की अपेक्षा "ओऽम" ही ईश्वर का श्रेष्ठ नाम बताया गया है – "ओऽम्" ही प्रत्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।

यःप्रयाति त्यजन्देहंस याति परमांगतिम् ॥

छान्दोग्य में "ओऽम इत्येतदक्षरं उद्गीथ भुपासीत् माण्डूक्य उपनिषद् में "ओमित्येतदक्षरं,"

सर्व तस्योपव्याख्यानम् "कठोपनिषद् में आचार्य यम ने नचिकेता को बताया कि सारे वेद जिस पद् को गाते हैं जिसको लेकर ब्रह्मचर्यव्रत, तथा तपस्यायें पूर्ण की जाती हैं, मैं उस पद को संक्षिप्त रूप ५ से सुनाता हूं। वह पद "ओऽम्" है – सर्वेवेदामत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणिच यद्वदन्ति यदिच्छन्तिब्रह्मचर्यचरन्ति
तप्ते पदं संग्रहण व्रवीमि" ओमित्येतत् –

मुण्डकोपनिषद् कहती है – "तमैवेकंध्यायथं आत्मानम्
अन्या वाचो विभुभ्रथ, अमृतस्यैष सेतुः"

एकमात्र "ओऽम्" का ध्यान करो। अन्य शब्दों को छोड़ दो यही अमृत सागर का सेतु है।

"गणेशपुराण" में "ओऽम्" को ही गणेश माना गया है। ध्यान दीजिए, यह बीस अर्थोंवाला है। समस्त अनर्थों को दूर करने से यह, विघ्नों को दबानेवाला विघ्न विघातक शासक है। "ओऽम्काररूपो भगवान्उकस्तु गणनायकः"।
सहि सर्वेषु कार्येषु पूज्यतेऽसौ विनायकः ॥"

व्यवहारिक रूप से मनुष्य मात्र जब भोजन से पूर्ण तृप्त होते हैं। तब चाहे ईसाई हों, सवन् बौद्ध, जैन, यहूद, आदि कोई भी हों, जब डकार आती है, तब सबके मुख से ओऽम् ध्वनि निकलती है, पुनः मुख से "ओऽम्" पेट ओऽम् बोलता है। बोलने में क्यों संकोच करते हैं।

बौद्ध, जैन भी "ओं नमो अरिहंताणम्" ओं नमः सिद्धांणम् इत्यादि अपने पंच नवकारों में बोलते हैं। अंग्रेजी भाषा के विस्तृत साहित्य में गौड (ईश्वर) के विशेषणों में "ओं नमः का अपभ्रंश ओमनी शब्द लगता है –

गौड इज् ओमनी प्रेजेन्ट = ईश्वर सर्वव्यापक है,
गौड इज् ओमनीशियेन्ट = ईश्वर अन्तर्यामी है,
गौड इज् ओमनीपोटेण्ट = ईश्वर सर्वशक्तिमान है,

यवनों में "अमीन" चलता है। "ओऽम्" विंशार्थक अक्षर है। इसके बीस अर्थ निम्न प्रकार हैं – "अव" धातु से मन प्रत्यय होकर "ओऽम्" बनता है।

यह मकारान्त होने से अव्यय हो जाता है"। "कृन्मेजन्तः" पाणिनि सूत्र से अव्यय होकर, तीनों लिंगों, सब विभक्तियों, तथा सब वचनों में समान रहता है, "सदृशंत्रिषुलिंगेषु सर्वासुच" इसके आगे

आनेवाले सब प्रत्ययों का लोप हो जाता है, ओऽम् एकरस रहता है।

अर्थः "रक्षण-गति-कान्ति, प्रीति, तृप्ति, श्रवण, मनन, स्वाम्यर्थ, याचन, क्रिया, इच्छा, दीप्ति, अवाप्ति, वृद्धि, आलिंगन, हिंसा, दान, भाग, ज्ञान, गमन, प्राप्ति आदि हैं। जो व्यक्ति एक बार "ओऽम्" का उच्चारण करता है, वह ईश्वर के बीस गुणों का स्मरण करता है। अन्य नाम, जो ईश्वर के लिए भक्त लोग बोला करते हैं, उनमें कोई भी नाम ऐसा नहीं, जिसके अर्थ "ओऽम्" से अधिक हों। अतः "ओऽम्" का सर्वश्रेष्ठ कीर्तन होना चाहिये – ओमानन्दं ओमानन्दं ओमानन्दं, ओऽम् , ओऽम्, ओऽम्" ।

वेदमाता का ओमामृत जीवन को मधुमय बना सकता है। विश्व की सर्वाधिक प्राचीन भाषा "देवभाषा" है। संस्कृत में "वेद" शब्द के सात अर्थ प्रसिद्ध हैं। वेदशब्द – "विद्यज्ञाने, विद-सत्तायाम्, विद्-विचारणे, विदृलृ लामे, विद् चेतनाख्याननिवासेषु इस प्रकार पाँच धातुओं से सात अर्थों में कृदन्त तथा धत्रप्रत्यय करके "वेद शब्द सप्तार्थ सत्यारी तथा सात महाव्यक्तियों के महान व्यवहार क्षेत्र का शब्द बना हुआ है। वेदों की विशेषताओं पर साहित्य का साक्ष्य निम्न प्रकार है। ये स्मृति, दर्शन तथा निति की उक्तिया हैं – मानव धर्मशास्त्र के अनुसार "वेदोऽखिलो धर्म मूलम" ।

"विदोध्दम् हि निर्वमौ" ।

एतं विदन्ति वेदेन, तस्माद् वेदस्य वेदता "॥ (मनु.)

"शास्त्र योनित्वात्" – (वेदान्त दर्शन)

तद्वचनादाम्नायस्य प्राणायाम् – " (वैशेषिक-दर्शन)

उपनिषदें तो वेद की आत्मा है जो वेद या वैदिक सभ्यता की ध्वजा उड़ा रही हैं।

निरुक्त के अनुसार "कर्मसम्पर्तिमन्त्रो वेदे" ।

इसी प्रकार भगवद्गीता में "वेदानां सामवेदोऽस्मि" कहकर वेदों की प्रतिष्ठा बढ़ाई गई है। पौराणिक साहित्य तो वेदों को साक्षी तथा आधार पाकर इतना बढ़ गया है कि उसे "कथा सरित्सागर" कहना उचित है। "भागवत्" अपनी विशिष्टताओं के लिए वेद का परिपक्व फल मानते हुए कहती है। "निगमकल्पतरोर्गलितं फलम्" । यह सब विस्तृत वेद परिवार की ही विशेषता है। यह इतना समृद्ध है कि शतशः प्रतीक कथा, आख्यान, आपको मिलेंगे, जिनमें शिक्षा कल्प, निरुक, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष रूपी सद्ग्रन्थों से ही आप वास्तविक अर्थ जान सकेंगे।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जिसे युक्तियों से सिद्ध किया जा सकता है। निम्न पांच परीक्षायें हैं जिन्हें समझ कर हम स्वयं निर्णय कर सकते हैं। आजकल यवन, ईसाई, अपने कुरान बाइविल आदि को ईश्वरीय पुस्तक कहते हैं। आर्यहिन्दू, वेदों को ईश्वरीय पुस्तक बताते हैं। किसे ईश्वरीय ज्ञान माना जा सकता है। तनिक गम्भीरतापूर्वक, निम्न कसौटियों पर जो खरा उतरेगा, मात्र वही ईश्वरीय ज्ञान हो सकता है –

प्रथम वह ग्रन्थ किसी भी देश विशेष की भाषा में न हो क्योंकि देश विशेष की भाषा में यदि होगा तो उस पर पक्षपात का दोष आयेगा। द्वितीय-उस ग्रन्थ में किसी मनुष्य या देश का वर्णन न हो। तृतीय जिसमें सबके उन्नति के सम्बन्ध में समान हितसाधन की शिक्षा हो, चतुर्थ – उसमें जो लिखा हो, युक्तियुक्त, विज्ञान, सम्मत, सब स्थानों में, सबके लिए उपयोगी हो।

पंचम – उसमें वर्ग विशेष की श्रेष्ठता, मारकाट, हिंसादि का वर्णन न हो।

इस प्रकार तर्कतुला पर तुलनेपर, बाइबल व कुरान, इस परीक्षा में खरे नही उतरेगे।

बाइबल अंग्रेजी तथा "कुरान" अरबी में है, जो कि देश विशेष की भाषा है, उन ग्रन्थों में व्यक्तिगत वर्णन मनुष्य सम्बन्धी व्यक्तिगत विचार लेनदेन कलह तथा अपने वर्ग के लोगों से मेल रखना, दुसरों को हराना, मारना, तथा काटना तक लिखा है।

एकमात्र "वेद" ही ऐसे ग्रन्थ हैं, जो जिस भाषां मे है, वह भाषा किसी देश की भाषा नहीं, इसी कारण उसे "देव-भाषा" कहा जाता है, उसमें किसी देश विशेष और व्यक्ति का इतिहास भी नही है –

"वेद शब्देम्य एवादौ प्रथकसंस्थाश्च निर्ममे"

मीमांसा कार कहते हैं कि जो कुछ नाम वेदों मे हैं जो संसार की कुछ वस्तुओं या व्यक्तियों के प्रतीत होते है वे सब यौगिक नाम हैं।

आख्या प्रवचनात्- जो कोई नदी, नगर, व्यक्तिनाम वेदों मे हैं सभी प्रवचन शैलीपूर्ण करने को हैं।

गायत्री उपनिषद कठ मण्डक एवं मांडूक्यादि उपनिषद वेदों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करती है।

"वेदश्चछन्दासि सवितुर्वरेणयम् भर्गो देवस्य कवयोऽन्नमाहु :।
कर्माणिधियस्तदु मे निवोध प्रचोदयात् प्रामिरेति"

(गायत्री-उपनिषद")

वेदमाता के महत्व को समझ कर ही, हम अपना तथा संसार का कल्याण कर सकते हैं।

ओऽम् शान्ति : शान्ति : शान्त्योम्